IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गीत एवं नाटक प्रभाग की उपलब्धि

डॉ0 मनीष कुमार
+2 संगीत शिक्षक
भी0एस0बी0+2 उ0वि0 बेलाही
पंडौल, मधुबनी

परिचयः–

''उपलब्धि'' को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है–''उद्देश्य को प्राप्त करना या उन लक्ष्यों को प्राप्त करना जो पूर्व में तय थे, उपलब्धि कहलाता है'' दूसरे शब्दों में हम इसे इस प्रकार भी लिख सकते हैं– ''किसी भी व्यक्ति, संस्था या संगठन इत्यादि द्वारा किया गया सर्वोत्तम कार्य उपलब्धि कहलाता है।'' यह जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू होता है।

गीत एवं नाटक प्रभाग की उपलब्धि की अगर हम चर्चा करें तो देखते है कि आकाशवाणी की एक इकाई के रूप में इसकी स्थापना की गई थी, और महज चार साल बाद सन् 1960 ई0 में इसे सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अधीनस्थ एक स्वतंत्र मीडिया युनिट का दर्जा इस प्रभाग को प्रदान किया गया। जो इस प्रभाग की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाएगी। जैसा कि पिछले अध्याय में लिखा जा चुका है। इसकी स्थापना पंचवर्षीय योजना के लिए समृद्ध जीवन्त प्रचार माध्यमों, विशेषकर पारंपरिक और लोक प्रचार माध्यमों के विभिन्न स्वरूपों का प्रयोग करने के उद्देश्य से की गई थी। आज यह संगठन लोगों के साथ तत्काल तादात्म्य बनाने और नए–नए विचारों को प्रभावशाली ढंग से अपने कार्यक्रमों में समाविष्ट करने की सशक्त स्थिति में है जो कि इसकी उपलब्धि ही मानी जाएगी, उपलब्धि इसलिए मानी जाएगी, क्योंकि ''सशक्त'' अर्थात् आज यह संस्था नए–नए विचारों को अपने कार्यक्रमों द्वारा प्रस्तुत करने में पूर्ण रूपेण सक्षम है।

आज यह संस्था सभी संस्थाओं से अलग एक नये ढ़ंग का कार्य कर रहा है। यह पारंपरिक नाटक, नृत्य–नाटिका , लोकगीत, कठपुतली जैसे विभिन्न मंचन स्वरूपों के द्वारा आम जनता का ध्यान राष्ट्रीय जीवन और देश के विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति के विभिन्न पहलुओं की ओर खींचता है और इसमें यह संस्था सफल भी होती है, जो इसकी उपलब्धि है।

गीत और नाटक प्रभाग द्वारा सन् 1966 ई0 में देश के सीमावर्ती क्षेत्र में प्रचार योजना शुरू की गई। इस योजना को शुरू करने का उद्देश्य या देश के संवदेनशील सीमावर्ती क्षेत्र में लोगों को प्रोत्साहित करना एवं देश की एकता ओरप अखण्डता की भावना से जोड़े रखना, उन्हें भटकने नहीं देखा, प्रभाग की यह योजना पूरी तरह से कामयाब रही जो इसकी उपलब्धि कही जाएगी। अपने योजना के सफल होने पर उत्साहित होकर इस प्रभाग ने सन् 1967 ई0 में सेना मनोरंजन शाखा गठित की इस सीमावर्ती क्षेत्र में तैनात जवान जो हर समय भय, तनाव, टेन्शन, अपने परिवार की चिन्ता में ग्रस्त रहते हुए भी देश की रक्षा में तत्पर रहते हैं, जिनके बदौलत हम चैन की नीन्द सोते हैं उन जवानों का थोड़ी देर के लिए ही सही मगर उन्हें इन चिन्ताओं से मुक्त करना उनका मनोरंजन करना। इस उद्देश्य में प्रभाग के कार्यकर्त्ता पूरी तरह सफल रहे हैं। ये लोग अपने कार्यक्रमों के द्वारा सेना के जवानों का भरपूर मनोरंजन करते हैं जो इनकी उपलब्धि ही है।

प्रभाग ने सन् 1967 ई0 में ध्वनि प्रकाश और अभिनय के सम्मिश्रव से एक नई विद्या विकसित की ''ध्वनि एवं प्रकाश'' शो। इस शो का उत्पत्तिकरण युरोप में हुआ। उसी के संशोधित संस्करण इस प्रभाग द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। युरोप के इस शो और भारत के इस शोभे बुनियादी फर्क सिर्फ इतना है कि गीत एवं नाटक विभाग द्वारा पहले शो के पूर्व जिसको प्रस्तुत करना होता है उस विषय को पहले साउण्ड ट्रैक के माध्यम से धटनाओं को सुनाते हैं तत्पश्चात भरपूर लाइट एंव उचित साउण्ड व्यवस्था में उसको 100–120 अभनेताओं, अभिनेत्रियों और नर्तकियों आदि द्वारा प्रसतुत किया जाता हैं इस कार्यक्रम के तहत संगीत एवं नाट्य प्रस्तुतियों द्वारा महान हस्तियों द्वारा प्रदत्त ज्ञान के दर्शन, अपनी सांस्कृतिक विरासत, जीवन, शिक्षाओं आदि विभिन्न पहलुओं से संबंधित ज्ञान के दर्शन उच्च्च तकनीक माध्यम द्वारा विशेष रूप से सामान्य जनता एवं युवाओं को शिक्षित करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

इस विभाग द्वारा ''ध्वनि एवं प्रकाश शो'' के तहत ''समर यात्रा'' ''सुब्रमण्य भारती'' जग छन होया'', ''विद्यापति'', ''मिर्जागलिब'' , ''झाँसी की रानी'' , ''कृष्णदेव राय'' , ''बढ़े कदम'' , ''राम चरित मानस'' ''मैं ओर कदम बढ़े रहे'' आदि प्रसिद्व कार्यक्रमों को प्रस्तुत करना गीत एवं नाटक विभाग की बड़ी उपलब्धि है।

आम जनता को गीत संगीत एवं नाटक के द्वारा जागृत करना, राष्ट्रीय नीति की जानकारी देना, उन्हें उनके क्षेत्र के आलावा दूसरे क्षेत्र की लोक विरासत से अवगत कराना ये सब गीत एवं नाटक प्रभाग की उपलब्धि ही है। उस पर इसके इतने कार्यक्रम है कि आम जनता को इसके प्रत्येक कार्यक्रम से एक नई जानकारी मिलती है। जैसे सीमा प्रचार के तहत् विभिन्न मेलों , त्योहारों , परिवार कल्याण जैसे विषय में निषेध, अस्पृश्चता, ग्राम उत्थान, राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिक सद्भाव, सामाजिक सुधार , दहेज विराधी, महिलाओं के उत्थान , बाल देखभाल और पोषण आदि गंभीर विषयों को अपने कार्यक्रमों द्वारा अत्यन्त रोचक बनाकर प्रस्तुत किया जाता है, जिससे शहरी जनता के साथ—साथ ग्रामीण जनता को भी आसानी से समझ में आ जाता है। इसके अतिरिक्त ग्रात पंचायत मंडलियों , शैक्षिक संस्थाओं, राज्य सरकारों , पविार कल्याण विभाग, समाज कल्याण, विभिन्न श्रम संगठनों रेलवे आदि से संबंधित विभिनन नीतियों की जानकारी ''गीत एवं नाटक विभाग'' प्रचार कार्यक्रम के तहत आम जनता को देती है जो अति महत्त्वपूर्ण है एवं इसकी बड़ी उपलब्धि है।

इस तरह गीत एवं नाटक विभाग लोक एवं पारंपरिक नाटकों, नृत्य, नाटक, लोकगायन और कठपुतली शो, ध्वनि एवं प्रकाश शो के अन्तर्गत ''जीवन और विकास का इस्तेमाल विभिन्न शहरों में नीति को ध्यान में रखते हुए मंच कार्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला अर्थात् डीविजन औसतन हर साल देश भर में 36,000 कार्यक्रमों की प्रस्तुति करता है। प्रमुद्ध संगीत जीवि समझ सकते हैं कि यह संस्था कितनी कामयाब हैं और इसकी उपलब्धि कितनी बड़ी है।

डीविजन के सभी समारोह देश के विकास के लिए अनुकूल है। ये समारोह सामाजिक, आर्थिक, और भावनात्मक ग्रहणशील बनाती है। हमारे देश के हरेक क्षेत्र में लोक कला की जो अकूत भंडार है। उन्हें एक दूसरे क्षेत्र की आम जनता को अपने कार्यक्रमों द्वारा जानकारी देना भी इनकी अहम उपलब्धि कही जाएगी। यहाँ तक कि इनके कार्यक्रम आदिवासी लोगों के लिए

भी है इनके लिए कई ''निकाय केन्द्र'' की स्थापना की गई है। जिनके द्वारा आदिवासी लोगों को राष्ट्रीय धारा से जोड़ने की कोशिश की जाती है।

गीत एवं नाटक प्रभाग के कलाकारों, मंडलियों द्वारा राजस्थान के रेगिस्तान क्षेत्र के अलावा, दूरस्थ कोनों में पहाड़ी क्षेत्र में, जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और पूर्वी क्षेत्रों की वर्फीली क्षेत्रों में भी लोगों को जगरूक बनाने के लिए राष्ट्रीय हित में अपने कार्यक्रमों की प्रस्तुति करता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इनके द्वारा राष्ट्रीय हित में अर्थात् आम जनता के हित में सभी कार्यक्रम पेश किये जाते हैं। जिस उद्देश्य को लेकर इस प्रभाग की स्थापना की गई थी, उस उद्देश्य से बहुत आगे बढ़कर इस संस्था ने काम किया है। इसका हरेक काम सर्वोत्तम कार्य की श्रेणी में आता है। अतः यह कहा जा सकता है कि इसकी जो भी कार्य योजनाएँ है वो इसकी उपलब्धि है।

बी0 आर0 मालवीय जी के शब्दों में:–

रेडियो, टीवी, फिल्म, सामाचार पत्र जनता के साथ संवाद स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। परन्तु गीत एवं नाटक विभाग अर्थात् **Song and Dramma Divison** मास कम्युनिकेशन की गैर व्यक्तिगत आधुनिक मीडिया के विकास के वावजूद आम जनता में संगीत एवं नाट्य प्रस्तुतियों द्वारा एक गहरा भावनात्मक प्रभाव, एक निजी स्पर्श अपने देश के प्रति उत्पन्न किया है। यह विभाग जन जागरण का काम करती है और विलुप्त होती लोक परंपराओं से लोगों को अवगत कराती है।

1954 ई0 में गीत एवं नाटक प्रभाग एक छोटी इकाई के रूप में स्थापित किया गया था। यह पंचवर्षीय योजना के तहत विभिन्न विकास कार्यक्रमों पर प्रचार के अलावा योजना चेतना पैदा करने के लिए क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय और खंड विकास कार्यालयों की इकाइयों के माध्यम से गॉव थिएटर दलों के कार्यक्रमों का आयोजन करने के लिए महानिदेशालय, ऑल इंडिया रेडियो के तहत कार्य करना शुरू किया।

सन् 1960 ई0 में डीविजन अपनी अनग इकाई मान लिया है, और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के एक स्वतंत्र मीडिया इकाई के रूप में स्थापित हुआ। डीविजन के मुख्य समारोह देश की प्रगति के बारे में आम जनता के बीच जागरूकता और भावनात्मक ग्रहणशीलता बना रहा है। देश के अधिकांश विभाग अपने प्रचार–प्रसार के लिए इनसे जुड़ते हैं। इनके कार्यक्रम आज रेडिया, टीवी, सामाचार पत्रों में प्रसारित, प्रकाशित होते रहते हैं। यह कहा जा सकता है कि ये सब इनकी जबरदस्त उपलब्धि है और अपने मिशन में यह संस्था पूर्णतः कामयाब है।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तक

1. संगीत की संसीगत शिक्षण प्रणाली –अमरेश चनु चौबे
2. भारतखण्डे स्मृतिग्रन्थ – श्री प्रभाकर नारायण चिचार
3. कविता कौमुदि, भाग–5 – राम नरेश त्रिपाठी
4. संगीत विशारद –वसन्त
5 पं0 ओंकरनाथ जी ठाकुर एवं उनकी शिष्य परम्परा – डॉ0 लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'
6 संगीत, ख्याल अंक – जनवरी फरवरी 1996
7 संगीत, मासिक पत्रिका – जनवरी–फरवरी 1988
8 संगीत संस्थाअंक – जनवरी फरवरी, 1989
9 संगीत – जून 1988

.